अन्नपूर्णा प्रार्थना

Annapurna Prarthana • श्लोक • देवनागरी

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति॥

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्॥

रचना / पाठ-परंपरा: पारंपरिक अन्नपूर्णा स्तोत्र के समापन में प्रचलित श्लोक
पारंपरिक पाठ; वर्तनी और पाठांतर संभव हैं।